

११६ अश्वत्थी पुस्तिका विधि, वा. मंगलार्चन
 अर्चनार्चन अ. श्रुत्यो. जे. वा. पु. वि.
 वा. पु. वि. आ. वा. पु. वि.

वायव्य ॥ ॐ अश्वत्थी कूलयुववदकनाथाय याइकां ॥ ॐ नमः ॥ ॐ अश्वत्थी
 नीलायाइकां ॥ ॐ ल्याध्वनकोणयुजाविधिः ॥ ॥ नमो दानवपूजन ॥ ॐ अलुः
 ॐ न्याययाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी नथयाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी माययाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी
 ल्याययाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी वनयाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी वायव्ययाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी
 वाययाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी नीलायाइकां ॥ ॐ अश्वत्थी अश्वत्थी न्याययाइकां ॥ ॐ अ
 ॐ अश्वत्थी याइकां ॥ ॐ निलाकयालपूजन ॥ ॥ नमो कालादिमध्याह्नयुः
 जन ॥ ॐ अश्वत्थी याइकां ॥ ॐ अश्वत्थी याइकां ॥ ॐ अश्वत्थी याइकां ॥ ॐ अश्वत्थी
 नवनाथयाइकां ॥ मध्याह्न ॥ अश्वत्थी याइकां ॥ ॐ निलाकयालदिमध्याह्नयुजन ॥ ॥

अध्यामासुवाकं कृतिगिरिविषयः इकां ॥ १ ॥ अं ॥ अतन्व गकिरेववावाः
नाधियतथ सुग्रीयाइकां ॥ १ ॥ अं ॥ अतन्व ग किरेववानन्व ग्रीमहावि
द्यानाजग्वनी ॥ १ ॥ वीनाधियतथ ॥ १ ॥ अं ॥ ॥ याइकां ॥ मूलनमठं ग
वकुलसंयुक्त ॥ १ ॥ आवाहना ॥ १ ॥ दि ॥ १ ॥ धनयानिमूडां दगयित ॥ ॥
॥ १ ॥ प्रीयुनवीनयागिनीयायाइकां युज ॥ १ ॥ यामि ॥ ॥ मताधिकालमेष्ट
युजनं ॥ १ ॥ अं ॥ सुग्रीयवदीयवलादवीथी ॥ १ ॥ महादूरकययाल ॥ १ ॥ ॥ ॥
युगप्रीडाठिया ॥ १ ॥ नमहामूजायी ॥ १ ॥ प्रीडाठियावादवीथीडाठिसनाथदवपी
महामादवीथीआधविगानन्वदवपीककाविमहकाविकावकपीडदयनि

॥ १ ॥ अं ॥ अतन्व गकिरेववावाः इकां ॥ १ ॥ अं ॥
॥ १ ॥ ॥ १ ॥ अं ॥ अतन्व गकिरेववानन्व ग्रीमहावि
द्यानाजग्वनी ॥ १ ॥ वीनाधियतथ ॥ १ ॥ अं ॥ ॥ याइकां ॥ मूलनमठं ग
वकुलसंयुक्त ॥ १ ॥ आवाहना ॥ १ ॥ दि ॥ १ ॥ धनयानिमूडां दगयित ॥ ॥
॥ १ ॥ प्रीयुनवीनयागिनीयायाइकां युज ॥ १ ॥ यामि ॥ ॥ मताधिकालमेष्ट
युजनं ॥ १ ॥ अं ॥ सुग्रीयवदीयवलादवीथी ॥ १ ॥ महादूरकययाल ॥ १ ॥ ॥ ॥
युगप्रीडाठिया ॥ १ ॥ नमहामूजायी ॥ १ ॥ प्रीडाठियावादवीथीडाठिसनाथदवपी
महामादवीथीआधविगानन्वदवपीककाविमहकाविकावकपीडदयनि

५२/५२

धिम ॥ वं ॐ श्रीमममदि नलप्रीकृदिकायेयाइकां ॥ मधुडरुनयकि कभलपु
जयतु ॥ वृत्तिंशी ॥ वं ॐ विमलपयचकायवलिगुद्र २२५५ ॥ विमलपयचक
॥ मम ४ मद्धा ॥ वं ॐ श्रीमालिनीयाइकां ॥ वं ॐ श्रीमलिन्याकायेयाइकां ॥
पुर्व ॥ वं ॐ श्रीचलाकायेयाइकां ॥ वं ॐ श्रीमहाकायेयाइकां ॥ वं ॐ मल्य ॥ वं ॐ श्री
गुफाकायेयाइकां ॥ वं ॐ श्रीगुफाविआयेयाइकां ॥ वायव्य ॥ वं ॐ श्रीगुफावायः
याइकां ॥ वं ॐ श्रीखचवायेयाइकां ॥ वृत्ति ॥ वं ॐ श्रीरुचवायेयाइकां ॥ वं ॐ
श्रीजिहवायेयाइकां ॥ आनय ॥ वं ॐ ॥ गुफायेयाइकां ॥ वं ॐ श्रीगुफाकां नगल
पुर्व ॥ वं ॐ श्रीगुफाकां ॥ धामि ॥ वृत्ति ॥ वं ॐ ॥ १२ मद्धा ॥ वं ॐ श्रीगुफाकां ॥ धामि ॥

५२
ASHA ARCHIVES
3266

ॐ श्रीनिर्मलहाथेयाइकां ॥१॥ ॐ श्रीनिर्विकारयेयाइकां ॥६॥ ॐ श्रीनिनालः
न्यायेयाइकां ॥७॥ ॐ श्रीनिर्वचनयेयाइकां ॥१०॥ ॐ श्रीसाम्यायेयाइकां ॥११॥
ॐ श्रीमहावलायेयाइकां ॥१२॥ ॐ श्रीबाधवयेयाइकां ॥१३॥ ॐ श्रीबाधयेयाइ
कां ॥१४॥ ॐ श्रीलीलायेयाइकां ॥१५॥ ॐ श्रीलालायेयाइकां ॥१६॥ आठगाय
मस ४॥ ॐ श्रीहवायेयाइकां ॥ ॐ श्रीनिनामयेयाइकां ॥१७॥ म॥
॥ ॐ श्रीश्रुकलाये ॥ ॐ श्रीकुडिकायेकुडिकानन्दद्वयाइकां ॥
म॥ १॥ ॐ श्रीमियायेमियानन्दद्वयाइकां ॥पूर्व॥ ॐ श्रीचयायेचयानन्द
द्वयाइकां ॥दक्षि॥ ॐ श्रीमद्यायेमद्यानन्दद्वयाइकां ॥उरुव॥ ॐ श्री

आयायेआयानन्दद्वयाइकां ॥पश्चिम॥ ॐ नित्यगवतुष्कानिका॥ ॥
ॐ श्रीश्रुक येआदिआनन्दद्वयाइकां ॥पूर्व॥ ॐ श्रीकलायेश्रुनादिश्रुः
नन्दद्वयाइकां ॥आ॥ म॥ ॥ ॐ श्रीमिवायेश्रुचिक्कानन्दद्वयाइकां
॥दक्षि॥ ॐ श्रीमियायेश्रुवतावनन्दद्वयाइकां ॥नेर्मथ॥ ॐ श्रीकांक
नायेश्रुक्कानन्दद्वयाइकां ॥पश्चिम॥ ॐ श्रीश्रुकलादिपंचक॥३॥ श्रीॐ
येश्रीरुद्रकर्मद्वयाइकां ॥वायव्य॥ ॐ श्रीक्कानायेम॥ कर्मद्वयाइकां ॥
उरुव॥ ॐ श्रीक्रियायेश्रीवालकर्मद्वयाइकां ॥ॐ म॥ ॐ श्रीकुडिक
येश्रीआठिनाथद्वयाइकां ॥म॥ ॐ कदिचतुर्क ४॥ धन ॥ चतुर्कपंचः

